विरह तामस का प्रकरण-राग सिंधूड़ो कड़खा

नोट : प्यारे सुन्दरसाथजी! यह विरह तामस का तब हुआ जब देहली में गोवर्धनदास और लालदास के बीच मुल्ला की मुलाकात से कुरान सुनने के बाद विचारों में अन्तर आ गया। लालदासजी ने स्वामी जी से कहा कि हमारा यकीन तो चटाई तक है। तब श्रीजी को सारा वृत्तान्त सुनने पर जोश आया और सब जागनी का काम छोड़कर सबको अलग-अलग भेज दिया और स्वयं अनूपशहर को चले। रास्ते में स्वास्थ्य अधिक खराब होने पर सनन्ध ग्रन्थ उतरा और उस समय यह विरह तामस में हुआ, उसे लिखा है। इसके बाद कलस हिन्दुस्तानी ग्रन्थ उतरा।

मैं चाहत न स्वांत इन भांत,
अजूं आउध अंग चले, इन नैनों दोनों नेक न आवे नीर।
दरद देहा जरद गरद रद करे, मैं क्यों धरूं धीर अस्थिर सरीर।। १ ।।

स्वामीजी तामस में हैं और अपने आपसे विचार कर रहे हैं कि जागनी के काम में सुन्दरसाथ के असहयोग से मुझे निराशावादी नहीं होना चाहिए। मैं इस तरह से शान्ति नहीं चाहता। मेरे तन के सभी अंग चलते हैं। निराशा की हालत में भी आंखों से आंसू नहीं आ रहे हैं। धनी के दर्द से मेरा शरीर पीला हो गया है, अस्त-व्यस्त हो गया है और धूल के समान मिट्टी हो गया है। अब मुझे मिट जाने वाले तन से कैसे धैर्य हो?

कठिन निपट विकट घाटी प्रेम की, त्रबंक बंको सूरो किनों न अगमाए।
धार तरवार पर सचर सिनगार कर, सामी अंग सांगा रोम रोम भराए।। २ ।।

धनी के प्रेम का रास्ता बड़ा कठिन है। इसमें कई कर्मकाण्ड (शरीयत) उपासनाकाण्ड (तरीकत) और ज्ञानकाण्ड (हकीकत) के टेढ़े रास्ते हैं, जिन पर चलने वाले बड़े-बड़े शूरवीर भी इस प्रेम-मार्ग पर नहीं चल पाते। यह रास्ता तलवार की धार पर चलने के समान है। इस रास्ते में सामने से गुण, अंग, इन्द्रियों के भाले छेद रहे हैं, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम धैर्य और साहस का शृंगार करके चलो।

सागर नीर खारे लेहेरां मार मारे फिरें, बेटो बीच बेसुध पछाड़ खावे।
खेलें मछ मिले गलें लेउछाले, संधो संध बंधे अंधों यों जो भावे।। ३ ।।

इस भवसागर में माया की लहरें थपेड़े मारती हैं। जिसमें यह जीव छोटे-छोटे टापुओं से टकराकर बेसुध हो जाता है, अर्थात् कमजोर दिल वाले साथियों के असहयोग से निराशा होती है। इस भवसागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ हैं। यह एक दूसरे को निगल रहे हैं। बड़े-बड़े गद्दीधारी महन्त, धर्माचार्य, साधारण मनुष्य को ज्ञान से भटकाते हैं। इस तरह से यह मनुष्य धर्मों के जटिल बन्धनों से बंधकर इसको अच्छा समझ रहे हैं।

दाहो दसे दसों दिस सबे धखे, लाल झालां चले इंड न झलाए।
फोड़ आकास फिरे सिर सिखरों, ए फलंग उलंघ संग खसम मिलाए।। ४ ।।

इन बड़े लोगों को भी काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार, मद, मत्सर की दशों दिशाओं से उठ रही ज्वालाओं ने नहीं छोड़ा है, इसलिए हे मेरी आत्मा! तुम इन सबसे बचो। क्षर ब्रह्माण्ड को ही फोड़कर धनी का ध्यान करके भवसागर को छलांग लगाकर पार कर जाओ। धनी तुम्हें मिल जाएंगे।

घाट अवघाट सिलपाट अति सलवली, तहां हाथ ना टिके पपील पाए।
वाओ वाए बढ़े आग फैलाए चढ़े, जले पर अनलें ना चले उड़ाए।। ५ ।।

इस भवसागर के घाट टूटे-फूटे हैं, अवघाट हैं तथा इनके पत्थरों पर काई (सिल) की चिकनाहट है। अर्थात् यहां साधु महात्माओं, धर्माचार्यों, कर्मकाण्डियों, कुटुम्ब की लोक-लाज में भटकने वालों को कितना

Nijanand App

ही समझाओ, उनके मनों पर लोभ की चिकनी काई लगी है, इसलिए कोई असर नहीं होता। इस लोभ (चिकनी सिल) का इतना जबरदस्त प्रभाव है कि यहां चींटी भी चलकर फिसलती है, अर्थात् साधारण जीव तो चल ही नहीं सकता। चारों तरफ इनकी चाहनाओं की पूर्ति के लिए इनके सेवक प्रचार-प्रसार में लगे हैं। लोभ की अग्नि को धधका रहे हैं, जिससे साधारण जीव के इश्क और ईमान डोल जाते हैं तथा जीव इस कठिन रास्ते को पार नहीं कर पाता है।

पेहेन पाखर गज घंट बजाए चल, पैठ सकोड़ सुई नाके समाए।
डार आकार संभार जिन ओसरे, दौड़ चढ़ पहाड़ सिर झांप खाए।। ६ ।।

अब महामतिजी अपनी आत्मा से कहते हैं कि ऐसे टेढ़े रास्ते तथा स्थितियों में अवसर पाते ही हाथी की चाल, घण्टे बजाते हुए, चलो, अर्थात् यदि कोई निन्दा करता है या रास्ते में बाधाएं डालता है, तो उसकी तरफ ध्यान ही मत दो। धनी की मेहर का पाखर पहन कर इश्क और ईमान के घण्टे बजाते चलो तथा साहस का सहारा लेकर लक्ष्य की ओर संसार के मान और अपमान की तरफ से अपने को सिकोड़ कर (मुख मोड़कर) इतना छोटा बना लो कि सुई के नाके से निकल सको, अर्थात् मान और अपमान की तरफ ध्यान ही मत दो। हे मेरी आत्मा! तुम माया की सब चाहनाओं को ऐसे छोड़ दो जैसे शरीर छोड़ा जाता है और भूलकर भी इनकी तरफ ध्यान न दो, अर्थात जिन्होंने साथ नहीं निभाया उनके बारे में मत सोचो। तुम अपने ही बल से पहाड़ पर चढ़कर कूद जाओ, अर्थात साहस करके इस जागनी के कार्य में लग जाओ।

बोहोत बंध फंद धंध अजूं कई बीच में, सो देखे अलेखे मुख भाख न आवे।
निराकार सुन्य पार के पार पिउ वतन, इत हुकम हाकिम बिना कौन आवे।। ७ ।।

अभी भी तेरे सामने इस रास्ते में झंझटें आएंगी। वह दिखाई तो देंगी पर अभी से उनका कुछ अनुमान नहीं किया जा सकता। फिर भी तू दृढ़ता के साथ ध्यान रखना कि तेरे धनी निराकार, शून्य के पार और अक्षर से परे परमधाम में हैं, जहां बिना धाम धनी की मर्जी से कोई आ नहीं सकता।

मन तन वचन लगे तिन उतपन, आस पिया पास बांध्यो विश्वास।
कहे महामती इन भांत तो रंग रती, दई पिया अग्या जाग करूं विलास।। ८ ।।

हे मेरी आत्मा! इस प्रकार के वचनों की विचारधारा से अपने तन, मन, धन को शक्तिशाली बनाकर अपने धनी पर दृढ़ विश्वास रखो। इस तरह से महामतिजी कहते हैं कि धनी के प्रेम में रम जाने पर ही धनी की आज्ञा होगी और मैं घर में जाकर धनी से आनन्द विलास करूंगी।

॥ प्रकरण ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ १०० ॥

राग श्री सामेरी

पिया मोहे स्वांत न आवहीं, न कछू नैनों नीर।
पिया बिना पल जो जात है, अहनिस धखे सरीर।। १ ।।

हे धनी! मुझे इस तरह से शान्ति भी नहीं आ सकती। विरह से आंखों में आंसू भी नहीं आते हैं। हे धनी! आपके बिना जो पल भी बीतता है वह दिन-रात शरीर को जलाता है।

सब अंग अगनी जलके, जात उड़े ज्यों गरद।
क्यों इत स्वांत जो आवहीं, जित दुल्हे का दरद।। २ ।।

इस विरह से सारे शरीर में आग लगी है। शक्तिहीन होकर धूल की तरह शरीर जलकर उड़ रहा है। जहां दूल्हे की जुदाई का दर्द हो वहां शान्ति कैसे हो सकती है?

Nijanand App